प्रेरितों के काम में परिवर्तित और अपरिवर्तित

प्रेरितों के काम में मन परिवर्तन के बहुत से उदाहरण हैं। पहली शताब्दी के प्रचारकों से वचन प्रचार को सुनकर और इतने लोगों द्वारा सुसमाचार को सुनकर एकदम मान लेने वालों से हमारा हृदय रोमांचित हो उठता है। जब हम दूसरों को उद्धार पाने पर आनन्दित देखते हैं तो हम भी आनन्दित होते हैं। परन्तु कई बार, हम इन्हीं लोगों को प्रचार करते और कुछ परिणाम न निकलने पर निराश होते देखते हैं। कई बार तो सुनने वाले बिना परिवर्तित हुए ही चले गए। उन परिवर्तित होने वालों अर्थात मसीही बनने वालों और अपरिवर्तित रहने वालों में क्या अन्तर था? इस पाठ में हमारा अध्ययन यही है।

परिवर्तन की बातें

हमें मनपरिवर्तन पर अर्थात उद्धार की योजना पर नये नियम की स्पष्ट शिक्षा को समझने की आवश्यकता है। इस योजना में बहुत सी बातें हैं, और ये बातें मनुष्य के परमेश्वर के साथ फिर से सम्बन्ध बनाने की ज़ंजीर की कड़ियों की तरह हैं। इस पाठ में हम उन बातों पर ध्यान देंगे जिनके बारे में कहा जाता है कि ये हमारे उद्धार में सहायक हैं। उन्हें हम निम्न तीन शीर्षकों में रखते हैं।

स्वर्ग का योगदान

1. *परमेश्वर* (2 तीमुथियुस 1:8, 9)। उद्धार की मूल योजना और रूपरेखा बनाने वाला वही है, इसलिए उद्धार दिलाने वाला परमेश्वर ही है। वह सब आशिषों को देने वाला है। उसने रूपरेखा बनाई अर्थात उसने हमारे उद्धार की योजना बनाई है।

2. *अनुग्रह* (इफिसियों 2:5)। उद्धार की पेशकश करना परमेश्वर की मजबूरी नहीं थी। यह तो हम पर की गई उसकी वह कृपा है जिसके हम योग्य नहीं थे। ''अनुग्रह'' का यही अर्थ है। हम उद्धार पाने के अधिकारी नहीं थे।

3. *मसीह* (मत्ती 1:21)। परमेश्वर का अनुग्रह अपने पुत्र को देने से समझ आता था

(यूहन्ना 3:16)। यीशु मसीह हमारा उद्धारकर्त्ता है।

4. *मसीह का लहू* (मत्ती 26:28)। कलवरी के क्रूस पर बहा यीशु का लहू पाप के प्रायश्चित के लिए था। बिना लहू बहाए, क्षमा हो ही नहीं सकती (इब्रानियों 9:22)।

5. *पवित्र आत्मा* (1 कुरिन्थियों 6:11)। मसीह के जाने के बाद संसार में पवित्र आत्मा भेजा गया। उसका काम मनुष्य के उद्धार की योजना को प्रकट करना था। उसने शब्द देकर बोलने के लिए कुछ लोगों को प्रेरित किया (प्रेरितों 2:4)। आत्मा के द्वारा, मनुष्य के पास वचन पहुंचाया गया था।

6. *परमेश्वर का वचन अथवा सुसमाचार* (रोमियों 1:16)। सुसमाचार के संदेश में उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है। उस संदेश को सुनने वाले हर व्यक्ति के लिए उद्धार पाने का अवसर है।

अब तक उल्लिखित सभी बातें मनुष्य के लिए किए गए स्वर्ग का योगदान हैं। ज़ंजीर की कड़ी की तरह इनमें से हर एक अनिवार्य है। यह बिल्कुल नहीं सोचना चाहिए कि एक आयत में उद्धार की एक बात को दृढ़तापूर्वक कहने और दूसरी बातों का उल्लेख किसी और पर निर्भर होने के कारण उनमें विरोध है।

मनुष्य का योगदान

उद्धार की योजना के दूसरे भाग का अध्ययन करते हुए, हमें कुछ बातें मिलती हैं जिनमें मनुष्य शामिल है। 2 कुरिन्थियों 4:7 के अनुसार सुसमाचार को मिट्टी के बर्तनों में डालकर सुनने वालों के लिए ले जाया जाता है। (रोमियों 11:14; 1 कुरिन्थियों 9:22 देखिए।) सुसमाचार को प्रचार तथा शिक्षा द्वारा हम तक लाया जाता है। पहला कुरिन्थियों 1:21 कहता है, ''क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार संसार ने ज्ञान से परमेश्वर को न जाना तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा, कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करने वालों को उद्धार दे।''

पापी का योगदान

एक अर्थ में, पापी अपना ही उद्धारकर्त्ता है (प्रेरितों 2:40)। कैसे? सुनकर विश्वास करके (मरकुस 16:16; रोमियों 10:17), पश्चात्ताप करके (प्रेरितों 17:30, 31; 2 कुरिन्थियों 7:10), मसीह में अपने विश्वास का अंगीकार करके (रोमियों 10:10) और बपतिस्मा लेकर (1 पतरस 3:21)।

मनुष्य ''स्वयं का उद्धार करते हैं,'' और इन बातों से जो मनुष्य द्वारा की जाती हैं, उद्धार होता है, इसलिए इसका अर्थ यह है कि वे उन आज्ञाओं को मानकर जो परमेश्वर ने दी हैं, अपना उद्धार करते हैं। निश्चय ही, हम समझते हैं कि यीशु हमारा उद्धारकर्त्ता है। उद्धार की योजना में ये कदम हमारा उद्धार केवल इस अर्थ में करते हैं कि यीशु द्वारा हमारा उद्धार करने से पहले इन शर्तों को माना जाए।

परिवर्तित होने और अपरिवर्तित रहने में अन्तर

प्रेरितों के काम की पुस्तक में सुसमाचार के प्रचार के बाद वचन को मानने और न मानने वालों में क्या अन्तर था?

आइए प्रेरितों 8 में इथियोपिया अर्थात कूश देश के उस अधिकारी की घटना को ध्यानपूर्वक देखें। परमेश्वर ने उसके लिए क्या किया? क्या वह उसका उद्धार करना चाहता था? यकीनन। क्या मसीह उसके लिए मरा था? हां। क्या पवित्र आत्मा ने उसके लिए कुछ किया था? हां, उसने एक प्रचारक को उसे यह कहानी बताने की प्रेरणा दी थी। सुसमाचार इस व्यक्ति के लिए था।

अब, आइए प्रेरितों 24 में फेलिक्स के मामले पर ध्यान देते हैं। वह परिवर्तित नहीं हुआ था। आइए हम उसके बारे में अपने प्रश्न पूछते हैं। परमेश्वर ने उसके लिए क्या किया था? क्या परमेश्वर उससे प्रेम करता था? हां। क्या यीशु उसके लिए मरा था? इसमें कोई संदेह नहीं। क्या परमेश्वर ने उसे आत्मा की प्रेरणा से संदेश दिया था? निस्संदेह। परमेश्वर ने फेलिक्स के लिए वह सब कुछ किया जो उसने इथियोपिया के आदमी के लिए किया था। इन दोनों में अन्तर यह नहीं था कि परमेश्वर ने एक को अवसर प्रदान किया और दूसरे को अवसर प्रदान करने में वह नाकाम रहा। उसने दोनों के लिए वही काम किया।

फिर, अन्तर दोनों की ग्रहण शक्ति में भी नहीं था कि एक ग्रहण कर सकता था और दूसरा नहीं। परमेश्वर हर एक को अपने पास आने का निमन्त्रण देता है। यदि पापी इसे स्वीकार नहीं कर सकते तो सुसमाचार का निमन्त्रण एक उपहास होता।

क्या मनुष्य के योगदान में अन्तर था? हम देखते हैं कि फिलिप्पुस ने इथियोपिया के उस व्यक्ति को सुसमाचार सुनाया, परन्तु पौलुस ने भी तो फेलिक्स को सुनाया था। यह भी कोई अन्तर नहीं है।

फिर, क्या अन्तर है? एकमात्र अन्तर पापियों द्वारा इसे ग्रहण करना है। एक ने आज्ञा मानी, और एक ने नहीं मानी। एक ने मन फिराकर अपने विश्वास का अंगीकार करने का साहस किया। दूसरे ने नहीं किया। एक पानी में जाकर बपतिस्मा लेने को तैयार था। जबकि दूसरा नहीं।

सारांश

यदि अभी आपका उद्धार नहीं हुआ है, तो यह इसलिए नहीं है कि परमेश्वर ने आपके लिए वह कुछ नहीं किया जो उसने हम में से किसी के लिए किया है। ऐसा भी नहीं है कि आप उद्धार पाने के योग्य नहीं हो। यह भी नहीं कि दूसरे लोगों ने आपके पास उद्धार का संदेश लाने से इन्कार कर दिया हो। यह केवल इसलिए है क्योंकि आप अपना उद्धार नहीं चाहते हैं (मत्ती 23:37 देखिए)।